Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kk/k if=dk

ज़िंदगी को रफ्तार देता सोशलमी डया

डॉ.रश्मि शर्मा
एसो सएट प्रोफेसर ,हिन्दी वभाग
अदिति महा वद्यालय,दिल्ली वश्व वद्यालय

सार

जनसंचार एक समुदाय तक सी मत न रहकर बहुतायत जन समूह को परस्पर जोड़ने की एक प्र क्रया है। अपने आरं भक काल से लेकर अब तक जनसंचार माध्यमों में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं । मुख्य रूप से इन्टरनेट का आगमन संचार क्रान्ति और मुख्य रूप से सोशल मी डया के स्थापन का प्रमुख कारण रहा है। इस मी डया के आगमन से मनुष्य का जीवन ,जीवन-शैली,सोच,कार्यप्रणाली सभी में परिवर्तन आया । इसके व वध आयाम हैं जिसमें अनेक ज्ञानवर्धक, मनोरंजक,सामाजिक ,राजनीतिक सभी प्रकार की साइट्स उपलब्ध हैं। इनसे न केवल व्यक्तिगत तौर पर अ पतु आ र्थक रूप से भी जुड़ने वाले लोगों को लाभ पहुंचता है। यही कारण है क वर्तमान में सोशल मी डया का दखल हर कसी के जीवन में इतना व्यापक है कइसके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती । ऐसा जान पड़ता है क जो जिंदगीकी गाड़ी पटरी पर थी , वह अचानक से तेज रफ्तार से दौड़ने लग गई है । जीवनके इस बदलाव मेंसोशल नेटव कंग साइट्स की अहम भू मका रही है। जो वश्व भर के लोगों को एक ही मंच पर एकत्रित करने में सक्षम है। यह एक ऐसा जनमाध्यम है जिसने आम जन को भी अपना पक्ष सार्वजनिक रूप से रखने की आजादी प्रदान की है। वस्तुतः सोशल मी डया का प्रभाव समाज में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में परिल क्षत होता है। बावजूद इसके वर्तमान में यह ऐसे जनमाध्यम के रूप में उभरा है क यह हमारे जीवन का अटूट हिस्सा बन चुका है , इसके बिना व्यक्ति जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकता । इसके माध्यम से मनुष्य ने घर बैठे बैठे ही जीवन यापन के अनेकानेक वकल्प खोज निकाले है। जिन का उपयोग एवं उपभोग वह न केवल आवश्यकता पड़ने पर ही करता है बल्कि अनेकों बार वहएक व्यसन की तरह इसके संजाल में फँसकर एक दूसरे ही लोक में वचरण करने लगता है।

बीज शब्द : सोशल मी डया ,जनमाध्यम,जनसंचार ,इन्टरनेट ,सूचना क्रांति, सोशल नेटव कंग साइट्स,

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

आलेख :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से जुड़कर ही उसका सम्पूर्ण वकास होता है। समाज समाज से वलग व्यक्ति की कोई पहचान नहीं होती क्यों क, उसे पहचान समाज के द्वारा ही मलती है । अक्सर जब भी कोई कसी से मलता है तो बातों बातों में वह यह कहता हुआ दिखाई देता है वह बहुत अ धक सोशलहै ,या नहीं है। सोशल यानि क सामाजिक नहीं है , मलनसार नहीं है। इसका तात्पर्य यही है क व्यक्ति समाज से जुड़ा होता है , समाज में अन्य लोगों से संपर्क स्था पत करके उनसे संवाद स्था पत करना,एक दूसरे से भावनात्मक रूप रूप से जुड़कर सभी के सुख दुख की खोज खबर लेकर उनकी समु चत सहायता करना यही सामाजिकता की पहचान होती है। सोशल मी डया भी एक ऐसा ही माध्यम है ,जहां लोग परस्पर एक कड़ी के रूप में जुड़ते चले जाते हैं । यह कड़ी समय के साथ निरंतर बढ़ती ही जाती है। समाज और समाजिकता के उपरोक्त दृष्टांत से मी डया के इस प्रच लत हो रहे नवीन रूप 'सोशल मी डया' की ववक्षा करना आसान हो जाता है । सोशल मी डया एक ऐसा मंच है जिसने व्यक्ति को अ भव्यक्ति की स्वतन्त्रता दी है , कल्पना की ऊंची उड़ान दी है , बदलाव ,नयी व्यवस्था ,नई दुनिया से परिचय करवाया है । आज यह केवल एक संचार माध्यम न होकर घर घर ,जन जन के जीवन का प्रमुख हिस्सा बन चुका है। जब हम संचार शब्द बोलते हैं तो सर्वप्रथम यही अर्थ ज़हन में आता है क जो संचरण करे वही संचार है ,जो परस्पर हम सभी को जोड़े वही संचार है ,जो एक खबर को सब तक पहुंचाए वह संचार है।आ र्थक उदारीकरण के दौर में सूचना प्रौद्यो गकी में नई तकनीक का वकास हुआ ,जिसके परिणामस्वरूप संचार साधनों में भी अनेक बदलाव देखने को मले । सूचना तंत्रों का बाजार गरम होने लगा । पहले जो मी डया कुछ ही लोगों तक या आ भजात्य वर्ग तक ही सी मत था, था, अब वह घर घर में , हर गली कूँचे ,हर तबके में पहुंचा । जहां पहले संचार के सी मत माध्यम थे अब न जाने कतने ही नए साधनों का वकास हुआ । यदि हम प्रागेतिहा सक काल काल पर एक दृष्टि डालें तो स्पष्ट हो जाता है क उस समय में सूचना पंहुचाने का काम हरकारे का होता था ।सार्वजनिक सूचना के लए ढ़ोल और नगाड़ों का प्रयोग करके सभी को एकत्रित कया जाता था और उन सभी जनों को जो भी आवश्यक सूचना या फरमान होता

था,सुनाया जाता था । धीरे धीरे डाक व्यवस्था के आरंभ के साथ डाक तार , च,ठ्ठी का सल सला अनेक वर्षों तक चलता रहा ।छापाखाना आरंभ होने के साथ ही अनेक पत्र -पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ ही प्रंट मी डया ने रफ्तार पकड़ी । इलैक्ट्रोनिक मी डया के आने आने से मुद्रित माध्यमों की रफ्तार में मंदी का दौर शुरू हुआ । यद्य प स्वाधीनता आंदोलनऔर स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भी हमारा प्रंट मी डया एक सजग प्रहरी बनकर देशवा सयों को जागरूक बनाने में पूर्ण सक्षम था ।वर्तमान में मी डया पर बाजारवाद के प्रभाव प्रभाव का असर प्रंट पर भी स्पष्ट दिखाई देता है। प्रतिस्पर्धा का बाजार इस कदर गर्म है , जिसमें हर कोई अपने को नंबर की दौड़ में शा मल करने में जुटा हुआ है ।भूमंडलीकरण,वैश्वीकरण या उपभोक्तावादी संस्कृति इन सभी के परिणामस्वरूप संचार के में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए फलतः जनसंचार के अनेकानेक नए वकल्प भी खुले।

आरंभ में जनसंचार माध्यमों की दुनिया समाचार पत्र -पत्रिकाएँ,रे डयोएवं दूरदर्शन तक की सी मत थी । दूरभाष की सु वधा भी रही । कन्तु इन सभी का सी मत दायरा था । कहीं भी बाजारवाद की छाप नहीं थी। इनमें निहित सभी सूचनाएँ और कार्यक्रमों का अपना एक स्तर था । हर वर्ग के अनुकूल साफ मर्यादित,मनोरंजन से भरपूर कार्यकमों का निर्माण होता था । वस्तुतः उस दौर मेंकार्यक्रमों में वैरायटी कम ही थी,ले कन जो भी थी, पूर्ण उपयोगी, स्तरीय, स्तरीय, मनोरंजक ,रु चकर, वै वध्यपूर्ण हुआ करती थी । एक ही चैनल पर गीत संगीत,ज्ञानवर्धक,बच्चों के लए,बड़ों के लए सभी के लए कार्यक्रमों का प्रसारण होता था। बच्चों से लेकर बड़ों तक हर कोई समाचार पत्र और पत्रिकाएँ पढ़ता था । इससे उनकी पठन- पाठन की क्षमता और कौशल का भी निरंतर वकास होता रहता था ,जो आज के संदर्भों में लुप्त प्राय ही है। वर्तमान समय मे नयी तकनीक केमोबाइल स्मार्ट फोन ,लैपटॉप, टैब जैसे उपकरणों एक नयी इन्द्रजा लक दुनिया से हमारा परिचय कराया । आए दिन इनका बाज़ार गरम रहता है । नए से नया लेटेस्ट मॉडल निकालने और उपभोक्ताओं को लुभाने के लए थोड़े बहुत बदलाव के साथ बाजार में लाने की होड़ लगी हुई है। इनके रहते आपको और हमें कसी वस्तु या सामग्री की जानकारी,सूचना आदि के लए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता आवश्यकता नहीं है। सब सु वधाएं घर बैठे ,एक ही जगह पर उपलब्ध है। ये नवीनतम उपकरण सामाजिक मी डया का ही हिस्सा हैं। इनपर आपके मस्तिष्क के साथ साथ आँखें और

और उँग लयाँ भी निरंतर गतिशील रहती है। प्रतिस्पर्धा के दौर में आज ''टेली वज़न इंडस्ट्री के के ज़्यादातर बड़े चैनल इन दिनों मोबाइल प्लेटफॉर्म में दिलचस्पी ले रहे हैं । भारत में 3जी और 4 जी मोबाइल सेवाओं के आगमन के साथ ही मोबाइल फोन पर टेली वज़न कार्यक्रम देखना संभव हो गया है।" (नया मी डया संसार ,डॉ॰कृष्ण कुमार रत्तू ,पृ॰21,वाइ कंग बुक्स 2012)

परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। इसी के चलते जनसंचार के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आया और वह था इंटरनेट सु वधा का आरंभ । इसने वैश्विक स्तर पर सभी को प्रभा वत कया,निजी क्षेत्र ,व्यावसायिक,सामाजिक ,आ र्थक, राजनीतिक कोई भी इसके प्रभाव और उपयो गता के मानदंडों से प्रभा वत हुए बिना नहीं रह पाया । आज एक ही स्थान पर बैठकर देश दुनिया में कहीं भी कसी से भी संपर्क स्था पत करना ,जानकारी प्राप्त करना , कसी भी वषय से संबन्धित महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण सामग्री इन्टरनेट के जरिये आसानी से उपलब्ध हो हो जाती है।सोशल मी डया क्रांति भी इंटरनेट प्रतिफ लत रूप है। सम्पूर्ण वश्व को इस सोशल नेटव र्कंग साइट्स रूपी वशाल ऐंद्रिक मायाजाल ने ऐसा वमोहित कर दिया है क इस इस संजाल से मुक्ति की कल्पना भी निरर्थक जान पड़ती है।संचार क्रांति के साथ ही अनेक नए संसाधन वक सत होते चले गए । यू ट्यूब,फ़ेस बुक,ट् वटर, इन्स्टाग्राम,व्हाट्सएप आदि आदि सोशल मी डया के ऐसे महत्वपूर्ण अंग हैं जिनके बिना आज के समय में जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती । ये हमारे जीवन का अटूट हिस्सा बन कर नीर क्षीर की तरह घुल गए हैं । "आज हर चीज़ को सोशल मी डया में उसकी उपस्थिति से नापा जा रहा है ।हर संस्था,व्यक्ति,कंपनी,सरकार, साहित्यकर्मी से समाजकर्मी तक और नेता से अ भनेता तक को सोशल मी डया में उसके वजन ,प्रभाव,और लोक प्रयता की कसौटी पर तौला जा रहा है।" (http://www.jagran.com/editorial/apnibaat-social-media-and-hindi-14693905.html)

परंपरागत जन माध्यमों की दुनिया को धता देता यह नया मी डया कई गुना तेजी से वस्तृत वस्तृत धरातल पर संवाद कड़ी के रूप में वक सत हुआ है। यह मी डया में आए बदलाव का का ही परिणाम है क वर्तमान में अनेकानेक नए रूपों में 'आज का मी डया' जिसे 'न्यू मी डया' कहकर अ भहित कया जा रहा है, निरंतर वकास की दिशा में प्रवाहयमान है। न्यू मी डया का ही एक रूप है सोशल नेटव र्कंग । सोशल अर्थात सामाजिक ,मी डया मतलब

माध्यम अर्थात एक ऐसा माध्यम जो पूरी दुनियाँ के लोगों के साथ जिनसे भी वह संवाद स्था पत करना चाहता है,एक ही स्थान पर बैठे बैठे संवाद कर सकता है। शक्षा से लेकर मनोरंजन,रहन सहन,खान पान, वचारों का आदान प्रदान,कला, संगीत, सनेमा, सूचनाओं का आदान प्रदान,कहीं पर भी , कसी से कोई भी बात साझा करने का सशक्त माध्यम बन गया है आज का मी डया यानि सोशल मी डया ।इसके द्वारा जिन्हें आप हम जानते हैं ,केवल वही संपर्क में नहीं रहते अ पतु इसके अतिरिक्त न जाने दुनिया भर में कहाँ कहाँ से लोग आपसे जुड़ते चले जाते हैं। इंटरनेट ने वैश्विक धरातल पर जिस प्रकार से सभी को एक दूसरे के जोड़ा है,वह निःसंदेह कसी सुखद आश्चर्य से कम नहीं । वैसे तो सोशल नेटव कंग साइट्स की की भरमार है ,ले कन भारत में कुछ ही ऐसी महत्वपूर्ण और उपयोगी साइट्स हैं जिन्हें अ धकांश लोग प्रयोग में लाते हैं। जैसे वाट्सएप ;ट् वटर ,फेसबुक, यू ट्यूब ,इन्स्टाग्राम, लंकडेन । यदि हमें अपने कसी परि चत को बधाई देनी है तो हम कहाँ जाएंगे,ज़ाहिर सी बात बात है क हम उसे या तो व्हाट्सएप पर या फ़ेस बुक पर बधाई देंगे साथ ही प्रतीकात्मक गुलदस्ता या कोई चत्र के साथ अपनी आ डयो और वेदियो के माध्यम से अपने वचारों का आदान प्रदान कर अ धक से अ धक लोगों को जोड़ सकक्ने में सक्षम हैं। सोश्ल मी डया से जुड़ा जुड़ा हर व्यक्ति आज एक पत्रकार की भू मका का निर्वाह कर रहा है ।हर मुद्दे पर वह अपनी आवाज बुलंद करब्लाग, फेसबुक, ट् वटर, आदि के माध्यम से कहीं भी कसी तक भी ,अ धक भी,अ धक से अ धक पहुंचाने की ताकत रखता है । इनके माध्यम से हम अपने संपर्क का दर दर बढ़ाते हुए अ धक से अ धक लोगों तक सी मत शब्दों में अपने वचारों का आदान प्रदान करने के लए पूर्ण स्वतंत्र हैं ।

वैश्विक महामारी के दौर में सोशल मी डया ने अहम भू मका निभाई है । कसी भी घटना,दुर्घटना के घटित होने ,लोगों को जागरूक करने , सावधानी संबंधी निर्देश सभी सोशल मी डया पर निरंतर चलता रहा है। आज जब सब कुछ घर से ही संचा लत हो रहा है , ऐसे समय में रोजगार के लए चंतित युवाओं की दु वधा का समाधान भी इसके पास मौजूद है । । आज का युवा भन्न भन्न स्तर पर रोजगार संबंधी आवश्यक कार्यवाही घर से कर पाने में में पूर्ण समर्थ है। नए रोजगार के साधन उपलब्ध कराने के लए ' लंक्डइन' सोशल साइट है,

है, जिसके माध्यम से युवा अधिक से अधिक से अधिक रोजगार संबंधी जानकारी प्राप्त कर रहे रहे हैं। इसे व्यक्तिगत न होकर व्यावसायिक दृष्टि से प्रोफेशनल्स के अनुपरूप निर्मित किया गया है,जिसका भरपूर लाभ अनेकों युवाओं को मिल रहा है। इसी प्रकार से आज स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा का आधार भी पूर्णतः यह वर्चुअल माध्यम ही है। जिसमें बच्चों का ध्यान ध्यान पढ़ाई से अधिक ध्यान मोबाइल में डाऊनलोड की गई एप्स पर अधिक रहता है। किन्तु महामारी के दौर को देखते हुए इससे सुरक्षित और उपयोगी विकल्प भी अन्य कोई नहीं नहीं है। दूसरे शब्दों में सोशल मीडिया वर्चुअल दुनिया का ऐसा मायाजाल है, जिसने किसी न किसी रूप में मानव सभ्यता को अपने वश इस हद तक किया हुआ , कि इसकी रौ में बहकर मनुष्य इससे बाहर की दुनिया से अंजान और उदासीन बन गया है।

"आज के दौर को सोशल मीडिया का दौर भी कहा जाता है। सोशल मीडिया में स्वयं की सक्रिय भागीदारी होती है,इसे 'जनता की आवाज'यानि जनता का अपना मीडिया' भी कहा जा रहा है। मीडिया के इस माध्यम पर प्रयोक्ता किसी अन्य मीडिया पर निर्भर न रहकर अपना स्वयं का मीडिया निर्मित कर लेते हैं। वे सोशलमीडिया पर स्वयं ही अपनी बात को दूसरों तक पंहुचाने के स्वरूप में तैयार करते हैं, जरूरी होने पर स्वयं ही सम्पादन करते हैं ,और स्वयं ही इसे प्रकाशित भी कर देते हैं। इस माध्यम पर संदेशों को इच्छित व्यक्तियों तक पहुंचाने के लिए भी दूसरों को 'टैग' करने अथवा संदेश भेजने के जो भी अतिरिक्त प्रयास करने होते हैं,वह भी प्रयोक्ता स्वयं ही करते हैं। साथ ही उन्हें अपने संदेशों पर तत्काल ही प्रतिक्रिया भी मिल जाती है इस प्रकार सोशल मीडिया पर प्रयोक्ता अधिक सहज,आत्मनिर्भर एवं अपनापन महसूस करते हैं। इस माध्यम पर खुलकर वह अपनी बात रख सकते हैं। "(**final-future-of-web-journalism-in-light-of-developing-SO..**भारत में नए मीडिया का प्रभाव और भविष्य,लघु शोध प्रबंध,नवीन चंद जोशी,शोधार्थी 2015-16)

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k i=dk

निष्कर्ष

सोशल मी डयाने हमारे जीवन जीने की परिभाषा ही बदल दी हे। इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पहलू हैं।वर्ष 2020 -21 वैश्विक महामारी का समय में जब सभी जगह लोग भयभीत होकर अपने घरों से निकल नहीं पा रहे। ज़िंदगी जैसे थम सी गई हो । ऐसे समय में ये सोशल मी डया ही है, जो लोगों संबल बना हुआ है;'मुसीबत में गाढ़े का साथी'। रुकी- ठहरी सी ज़िंदगी को रफ्तार देता ,बुझे चेहरों पर हंसी और मुस्कान बिखेरता सोशल मी डया ।इसका सशक्त स्रोत मोबाइल स्मार्ट फोन पर फेस बुक , यूट्यूब,व्हाट्स एप,ब्लॉग ,इंस्टाग्राम, जिसका उपयोग हर कोई करता है । आज के संदर्भ में यदि हम देखें तो इसके बिना कसी का भी गुजारा है नहीं । अपनों की खैरियत , प्रत्येक अवसर को आपस में एक दूसरे से साझा करना ,कोई चुटकुला,सं क्षप्त कहानी ,पारिवारिक या अन्य चत्रों को ग्रुप पर शेयर करना,मॉर्निंग संदेश ,आवश्यक सूचना,सुखद एवं दुखद कसी भी घटना की सामूहिक जानकारी देना और कतनी प्रकार की सामग्री है जिसे व्हाट्स एप के माध्यम से हम कसी भी क्षेत्र ,राष्ट्र ,समूह आदि में घर बैठे ही ,कुछ ही समय सभी से साझा कर सकते हैं । सोशल मी डया एक ऐसा अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी माध्यम है जिसका यदि सही से आवश्यकतानुसार प्रयोग कया जाए तो इससे समाज ,राष्ट्र तथा इससे जुड़े सभी लोगों का हिट संभव है। कन्तु खेद इस बात का है क आज यह भी एक व्यसन की भांति बनाता जा रहा है। एक बार जब इन एप्स के उपयोग की आदत पड़ जाती है , तो समय का ध्यान ही नहीं रहता और उपयोगकरने वाला सब कुछ बिसरा कर इन्हीं में लगा रहता है । कुछ इनमें से ऐसी भी हैं जिनका निय मत प्रयोग अर्थोपार्जन के अवसर भी प्रदान करता है। स्पष्टतः यदि कसी भी माध्यम को तरीके से ,जरूरत के अनुसार उपयोग में लाया जाता है ,तो उससे लाभ ही होता है । कन्तु यदि उसका उपयोग जरूरत से ज्यादा ,बेवजह,गलत तरीके से से कया जाए तो इसका परिणाम अत्यंत कष्टप्रद होता है। 'अति हर चीज की बुरी होती है" यह उक्ति सोशल मी डया के संबंध में पूर्ण रूप सटीक है।क्यों क इसके निरंतर,लगातार प्रयोग से युवाओं और बच्चों पर मान सक दवाब बना रहता है, स्वास्थ्य पर भी वपरीत असर देखने देखने को मल रहा है । सब जानते हुए भी कोई भी इसे छोड़ नहीं पाता है। अतः इस सम्पूर्ण

सम्पूर्ण ववेचन से इस तथ्य क पुष्टि हो जाती है क हमें इस सोशल मी डया का सदुपयोग सदुपयोग करते हुए इसके हानिकारक दुष्परिणामों से बचने का प्रयास करना चाहिए ; कन्तु दु वधा यह है क सब जानते हुए भी आज का प्रयोक्ता एकदम खामोश, उदासीन,अंजान बना हुआ है ।